तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'देह की कीमत': समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. किरण शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, यमुनानगर ।

सारांश

तेजेन्द्र शर्मा उन कथाकारों में से हैं जो विदेश में रहते हुए भी भारतीय जीवन की सच्चाईयों से परिचित हैं । 'देह की कीमत' जैसी कहानियों से बहुरेखीय यथार्थ का आंकलन करते हुए तेजेन्द्र शर्मा कथा क्षेत्रा में नई पहचान बनाते हैं । उनकी कहानियाँ जीवन धर्मी हैं । वे जीवन के गहरे अंध्कार में धँसती है और जीवन के लिए एक मूल्यवान सत्य बचा लेती हैं । 'देह की कीमत' कहानी में पम्मी के वैध्व्य जीवन का उल्लेख, पम्मी की सास का कटु व्यवहार आज के जीवन की वास्तविकता को प्रकट करता है । विध्वा होना अभिशाप है, लेखक ने नारी जीवन की विडम्बना को प्रकट किया है । लेखक ने पम्मी के ससुर को उसके पक्ष में दिखाकर जीवन को गहन अंध्कार में जाने से बचाकर नारी की स्थिति को मार्मिक रूप में चित्रित करके समाज को बोध् कराया कि नारी समाज की ध्ुरी है ।

प्रवासी – एक ऐसा शब्द है जो अपना भी लगता है और पराया भी । यह निकटता भी दर्शाता है और दूरी भी । मनुष्य जीवन एक ही समय में दोनों होने को बाध्य है । प्रवासी साहित्य आज विरह राग का आलाप है, जहाँ व्यक्ति का विलाप नहीं समुदायों का संतप्त स्वर सुनाई देता है । प्रवासी कथा साहित्य में एक बहुचर्चित नाम तेजेन्द्र शर्मा है वे ऐसे साहित्यकार है जो विदेश में रहते हुए भी भारतीय जीवन की सच्चाईयों से जुड़े है । जब कहानी में वर्णित उनके नारी पात्राों की बात आती है तो वे नारी के अन्दर उठने वाले विचारों को भी चरित्र में ढाल देते हैं –

'देह की कीमत' कहानी की कथा कहानी की नायिका पम्मी उर्फ परमजीत के इर्द–गिर्द घूमती है । जो विध्वा हो चुकी है, जिसके दुःख का कोई ओर–छोर नहीं है। विध्वा स्त्राी जो इस समाज में अपशकुन एवं दुर्भाग्य का प्रतीक मानी जाती है ।

फ्पुत्तर नूं तां खा गई, हुण ओसदे पैसे भी खा जायेगी । इस तरह की बात बीजी जो पम्मी की सास है । बिना उसके दुःख की परवाह किए बोलती जा रही थी ।य

आज पम्मी ना जाने कितनी सीढ़ियों से नीचे गिर पड़ी है । उसमें उठकर बैठने की ना तो ताकत ही है और ना ही हिम्मत! ऐसा कैसे हो जाता है?..... एक ही घटना आपके समूचे जीवन को कैसे तहस–नहस कर देती है .. जिजीविषा बहुत निर्दयी वस्तु होती है । इन्सान को जीवित रहने के लिए मजबूर करती रहती है । वरना क्या आज पम्मी के पास जीने का कोई बहाना है, उसके जीवन पर छाया अँधेरा तो और भी विकराल होता जा रहा है ।

अंधेरे में जीने का अभ्यास है पम्मी को ! .... तभी तो बीजी की कटु बातें और देवरों का निर्दयी व्यवहार भी उस अंधेरे को चीरकर उसे क्षत–विक्षत नहीं कर पा रहे हैं।

बीजी अपनी पीड़ा को प्रकट करते हुए कहती है कि –

फ्मैं तां पहले ही कहन्दी–सी, कुड़ी मंगली है ।... ऐथे ब्याह नहीं करना ! ... मेरी तां कदी कोई सुणदा ही नहींय ... बीजी का विलाप जारी था ं

ऐसे समय पम्मी के ससुर अपनी पत्नी को इसका खुलासा करते हुए कहते है कि–

फ्ना, उसके पयो ने कुछ छुपाया था क्या! ... साफ़–साफ़ बोल दिता था कि हमारी कुड़ी ता मंगली है । ... ओस वक्त तो तेरे काके ने ही कह दिया था कि वोह इन बातों को माणता ही नहीं । ... फिर आज किस बात की शिकैत है?य

बीजी अपने पति की बात सुनकर कहती है–

फ्मेरा तां पुत्तर चला गया! ... तुसी मैंनूं ही लेक्चर दे रहे हो?य

ऐसे समय में दार जी जो पम्मी के ससुर है और पम्मी की पीड़ा को समझते हैं कहते हैं –

फओये जे तेरा पुत्तर गया है तो, ओस अभागन का भी तो खसम चला गया ।... ओय सोच भागवाने, विध्वा का जीवन किसी को चंगा लगदा है ?य

लेकिन बीजी कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हैं वो परम्परा से चली आ रही रूढ़ीवादी विचारधरा के अनुसार पम्मी को ही अपने पुत्रा हरदीप की मृत्यु का कारण मानती है और सारा दोष पम्मी और उसके परिवार वालों के ऊपर डालते हुए कहती हैं –

फहाय ओये कुड़ी न निकली, डायण निकली, लोको! माँ पयों ने अपनी डायण हमारे हवाले कर दिती ... हुण मैं की करां जी?य

लेकिन दार जी हिम्मत नहीं हारते और अपनी पत्नी को समझाते हुए कहते है –

फकरणा क्या है, बस अपनी बहु नू संभालो ।... हरदीप की निशाणी है उसदे पास ... निक्के बच्चे नूं उसने संभालणा है । ... मैं तो कहता हूं... ।य और दार जी चुप हो

की कहंदे हो ... । कुछ बोलो तां सही ।य

बीजी के बार–बार पूछने पर दार जी जो पम्मी की पीड़ा से भली–भांति परिचित है और समाज की परवाह न करते हुए उसके भविष्य के बारे में सोचते हुए पुनर्विवाह या विध्वा विवाह की बात करते हुए कहते हैं कि –

फमैं तो कहता हूं... असी आप ही थोड़े वक्त के बाद कुड़ी दा दूसरा ब्याह कर दें।.. कुड़ी दा जीवन संवर जाएगां ... ते साडी इज्जत रह जायेगी ।य

लेकिन बीजी जो लकीर की फकीर है बदलना नहीं चाहती है, इस बात का विरोध करते हुए कहती है –

फहाय ओये रब्बा । .... कैसा बाप है एह बन्दा । ... अभी पुत्तर नूं मरे हफ्ता नहीं होया, ते बहू दे दूजे ब्याह दी गल करदा पया है ।... हाय ओये ।य

लेकिन दार जी बीजी की मनोव्यथा को समझते हुए भी पम्मी के भविष्य के प्रति चिन्तित है –

अपणे बैण बस कर । ... पम्मी की तरफ ध्यान दे । दारजी का धैर्य चुकता जा रहा था ।

दारजी तो हरदीप के गलत तरीके से विदेश जाने के समर्थक भी नहीं थे परन्तु हरदीप को बीजी की पूरी शह है । ... बीजी का मन तो इन्पोर्टेड सामान के साथ बंध रहता है ।....

विदेश जाने की चाह ठीक और गलत तरीके से नवयुवकों को आकर्षित करती है। जब पम्मी हरदीप के 'इल–लीगल' तरीके से जाने का विरोध करती है तो हरदीप उसे समझाते हुए कहता है –

फओय झलिल्ये, जब तक रिस्क नहीं लेंगे, तो यह ऐशो आराम के सामान कैसे जुटायेंगे । .... यह सारी इम्पोर्टेड चीजें कहाँ से आयेंगी ।य

फमुझे इन चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं जी !... बस आप यहीं रहिये जी ! ... हम अपनी दाल–रोटी में ही खुश हैं ।य

फतो आदरणीय पम्मी जी, तुसी दाल–रोटी विच खुश रहो । ते बस आह ही खांदे रहो ! ... सरदार हरदीप सिंह दाल–रोटी में खुश रहने के लिए पैदा नहीं हुआ ।य

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए हरदीप कहता है –

फओये तुम जनानियों को मर्दों की बातों में दखल नहीं देना चाहिए । .... तुम अपना घर संभालों ... बस पैसे कमाना हम मर्दों का काम है । वोह हमारे ऊपर छोड़ दो ।

फरीदाबाद का वैध नागरिक, खाते–पीते घर का 'काका' जापान में अवैध काम करने को अभिशप्त था । ....

फवहाँ वो कुली भी बन जाता था तो कभी रेस्टॉरेंट में बर्तन भी माँज लेता था .... हर वो काम जो हरदीप अपने देश में किसी भी कीमत पर नहीं करता, जापान में सहर्ष कर लेता था । .... कारण ! .... झूठी शान के अतिरिक्त और क्या हो सकता है .... कि लड़का जापान में काम करता है ।

हरदीप बुखार की हालत में भी काम करने को निकलता है क्योंकि अवैध कर्मचारी को तो रोज़ के रोज़ काम करने पर ही दाम मिलते है । काम नहीं तो दाम नहीं। ... मन ही मन हरदीप को यह चिंता खाए जा रही थी । सड़क पार करते समय हरदीप को जोर का चक्कर आ गया । तेज़ रफ़्तार से आती कार के ड्राइवर ने पूरे जोर से ब्रेक लगाई थी । ... परन्तु हरदीप के जीवन का दीप गिंज़ा की व्यस्त सड़कों के बीचों–बीच बुझा पड़ा था ।

हरदीप के साथियों में शोर मच गया । हड़कंप की सी स्थिति थी अवैध लाश ! .... लावारिस ! .... उसे लेने कौन जाये ! .... हरदीप के दसों दोस्त भी तो अवैध थे – लावारिस जिन्दा लाशें ! .... जो भी लाश लेने जायेगा, वही ध्र लिया जायेगा ! .... पर सतनाम के पास तो वैध वीज़ा था । ... वो तो हरदीप की दोस्ती के कारण सबके साथ रहता था । ..... फिर गुज़ारा भी सस्ते में हो जाता था । सतनाम ने जाकर लाश को पहचाना । ... पर अब लाश का करे क्या?

विडम्बना है क्योंकि एक तो हरदीप अवैध तरीके से आया है । दूसरा लाश को भेजने में खर्चा इतना अध्कि है कि जिसे चुकाना आसान नहीं है और हरदीप का अपना इतना पैसा नहीं था ये तो दोस्तों ने मिलकर इकट्ठा किया ।

जिंदा इन्सान का हवाई जहाज़ का किराया कम लगता है, परन्तु लाश को जापान से भारत भेजना बहुत मंहगा सौदा बन जाता है । किसी प्रोफेशनल से लाश पर लेप चढ़वाना, ताबूत का इन्तज़ाम, सरकारी लाल फीताशाही, और हवाई जहाज़ का किराया ..... सतनाम ने सभी दोस्तों से बातचीत की ..... सभी बड़े

दिल वाले थे । पंजाबी खून ने ज़ोर मारा और दो दिन में ही तीन लाख भारतीय रूपये के बराबर पैसा इकट्ठा हो गया .... सभी दोस्तों ने अपने यार को श्र(ांजलि के रूप में यह पैसा एकत्रित किया था ।

सारी स्थिति को जानने के बाद भारतीय दूतावास में कार्यरत नवजोत सिंह परामर्श देते हुए सतनाम से कहता है ।

फ्सतनाम, अगर यह सारा पैसा इस लाश को हिन्दुस्तान भेजने में खर्च हो गया, तो हरदीप की बीबी को क्या मिलेगा ... बस एक लाश! .... उस पर वो अभागन क्रिया–कर्म का खर्चा करेगी, सो अलग ।य फ्आप कहना क्या चाहते हैं बाऊजी?

अगर हम इस लाश का क्रिया–कर्म यहीं जापान में कर दें, तो इसकी अस्थियाँ तो मुफ्रत भारत भेजी जा सकती हैं, डिप्लोमैटिक मेल में भेज देंगे.... ये पैसा उसके काम आयेगा ।य

सतनाम सिंह को नवजोत की बात समझ आ जाती है और वह हरदीप के घर उसके मरने का समाचार दे देता है और बताता है कि हरदीप का क्रिया–कर्म करके उसके पैसे पम्मी के नाम भेज रहे हैं ।

तूफान का झोंका एक भूचाल की तरह आया । बीजी अर्थात् हरदीप की मां कटु वचन कहती है फ्पुत्तर नूं तां खा गई, हुण ओसदे पैसे भी खा जायेगी?य

हरदीप के पिता इस बात का विरोध् करते हुए कहते है कि –

अकल दी बात कर कुलवंत ! .... ओस बेचारी को तो अभी तक यह भी नहीं पता कि वो विध्वा हो चुकी है ।य

दारजी अपने परिवार के लोगों के व्यवहार पर हैरान है कि किस तरह सभी पम्मी के नाम पर आने वाले पैसों के विषय में विरोध् कर रहे है । हरदीप के पिता दार जी को दुःख और गुस्से दोनों पर काबू पाना भारी पड़ रहा था । क्योंकि उनका दूसरा पुत्रा भी विदेश जाने को उत्सुक दिखाई दे रहा था ।

दार जी अपने परिवार को देखकर हैरान थे, क्षुब्ध थे.. अपने ही पुत्रा या भाई के कफ़न के पैसों की चाह इस परिवार को कहाँ तक गिरायेगी उन्हें समझ नहीं आ रहा था। मन किया सब कुछ छोड़–छाड़कर सन्यास ले लें । लेकिन पम्मी के भविष्य के विषय में सोचते हुए दार जी नवजोत सिंह जो जापान में भारतीय दूतावास में कार्यरत है कहते हैं–

फ्हाँ जी नवजोत सिंह जी, आप ... ड्राफ्रट परमजीत कौर के नाम से बनवाइयेगा । ... और . और अस्थियाँ थोड़ी इज्जत से किसी कलश में भिजवा दीजियेगा ।य

दारजी के आँसुओं ने अपनी आँखों से विद्रोह कर दिया और वे निढ़ाल होकर जमीन पर ही बैठ गए । बीजी का विलाप जारी था ...

फ्ऐस कमीनी नूं तां पैसा मेरे पुत्तर तो ज्यादा प्यारा हो गया । .... अपने पुत्तर दे आखरी दर्शन वी नहीं कर सकांगी । ... खसमाँ नू खाणिये तेरा कख न रहे ।य

पम्मी एक लुटे–पिटे मुसाफिर की तरह जिसके दुःख का कोई ओर–छोर नहीं था वह कभी अस्थियों को देख रही थी कभी ड्राफ्रट को उसे समझ नहीं आ रही थी कि ये तीन लाख उसके पति की देह की कीमत है या उसके साथ बिताये समय की कीमत !

उसका मन बार–बार कह रहा है कि नर–नारी समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं, जिनके संतुलित व्यवहार से परिवार में सुख–शांति उत्पन्न होती है, सै(ान्तिक रूप से नारी की मर्यादा को सदा मान्यता मिलती रही है । ईश्वर की शक्तियों का लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, काली आदि नारी रूपों में ही उल्लेख किया गया है । वह शक्ति, ध्न और ज्ञान की प्रतीक मानी गई है । वह हमारी राष्ट्रीयता का भी प्रतीक है । पर इतना होते हुए भी व्यावहारिक रूप में उसकी स्थिति विभिन्न कालों में उठती गिरती रही है । पम्मी के लिए संवेदनशील भावदशा शक्ति का संयोजन नहीं, अवसाद का कारण है । वह लाश की तरह जिन्दा है उसकी आत्मा मर चुकी है । यह कहानी यह भी बताती है कि आम आदमी दर्शक है वह स्थितियों को चुपचाप सह सकता है उनसे टकरा नहीं सकता, क्योंकि वह स्थिति विशेष का भोक्ता मात्रा है उसे बदलना चाहते हुए भी वह बदल नहीं सकता उसे वैसा ही झेलने के लिए मजबूर होता है । स्त्राी पुरूष के बिना नारी सामाजिक रूप से ही नहीं, अपितु आर्थिक रूप से भी पूर्णतः असुरक्षित है । उस पर व्यंग्य के बाण मारे जाते हैं कुटुक्तियों से प्रहार किए जाते हैं ।

पंत ने ठीक ही कहा है –

मूंद पलकों में प्रिया के ध्यान को
थाम ले अब हृदय इस आह्वान को ।
त्रिाभुवन की भी श्री भर सकती नहीं
प्रेयसी के शून्य पावन स्थान को

नारी समाज की इकाई की नहीं, अपितु उसकी निर्मात्राी भी है । नारी के प्रति दृष्टिकोण से किसी समाज के चिन्तन का पता चलता है । नारी को गौ के समान ही रक्षणीया माना गया है । नारीत्व के उत्थान में ही देश और समाज का पुनर्निमाण है । नारी गरिमा को एक सामाजिक मूल्य के रूप स्वीकार कर लेना चाहिए । नारी की सामाजिक स्थिति को प्राचीन इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखते हुए यह अनुभव करना चाहिए कि समाज की उन्नति के लिए नारी का उत्थान आवश्यक है । नारी की पुरूष से समता, नारी स्वतन्त्राता आदि युग की महत्त्ववपूर्ण आवश्यकता है, किन्तु इसके साथ ही नारी की करूणा, परोपकार, त्याग, तप आदि सहज गुणों के कारण वह पुरूष से महान है । हमें ध्यान यह रखना है कि स्त्राी के मौलिक गुण सुरक्षित रहे, उसे समाज में सम्मानपूर्वक ढंग से जीने का अध्किार प्राप्त हो । वह अपनी अच्छी पहचान बनाए, स्त्राी होने के सौभाग्य को पूरे मन से भोगे और अपनी आने वाली पीढ़ी को एक उर्वर ध्रती दे, जो नारी की गुणवत्ता को और अध्कि बढ़ा सके ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

तेजेन्द्र शर्मा, सीधे रेखा की सीधे परतें प्रथम संस्करण – 2009, वाणी प्रकाशन, 4695, 21–ए दरियागंज, नयी दिल्ली, 11002.

सुमित्राानंदनपंत, पल्लव ;1967द्ध